# आजाद चिड़िया

**– वंदना टमटा**

एक बार की बात है जब मैं अपने आँगन में टहल रही थी तभी मुझे एक घायल चिड़िया का बच्चा दिखाई दिया जो मेरे आँगन में आ गया था। तो तब मैं उसके पास गयी। शायद वह चिड़िया का बच्चा उड़ना चाहता था लेकिन उड़ नहीं पा रहा था। मुझे लगा कि वह कुछ परेशान है और मैंने उसे अपने हाथों से पकड़ लिया। वह आसानी से मेरे हाथों में आ गया और मैंने उसको सहलाया तो वह कुछ सहज हो गया ।

जब मेरे परिवार ने उसे देखा तो वह उसे देखकर बहुत खुश हुए कि चलो इसको हम पाल लेते हैं और इसका कुछ इलाज करके ठीक–ठाक कर देते हैं और फिर अपने पास ही रख लेते हैं। मैंने उसकी ओर ठीक से देखा तब मुझे समझ आया कि इसके गले में कुछ फंसा है। तो मैंने धीरे से चिड़िया के गले से एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा निकाला। फिर अपने हाथों से पानी की बूंदें उसके गले में डालीं और उसे पानी पिलाया।

उसी समय मेरे बच्चे भी वहां आ गए थे तो बच्चों ने कहा कि चलो हम सब इसे पाल लेते हैं। फिर हम सबको उस घायल अवस्था में चिड़िया को छोड़ना उचित भी नहीं लगा। हमें लगा कि ऐसे चिड़िया को छोड़ना नहीं चाहिए, कहीं वह किसी जानवर का शिकार न बन जाए। इसीलिए जब तक वह ठीक नहीं होती है, तब तक हम उसे पाल लेते हैं।

हम एक पुराने जूते का डिब्बा ले आये और हमने उसमें कुछ छेद किये। उसमें हमने कपड़ा बिछा दिया ताकि वह चिड़िया उसमें आसानी से रह सके। एक कटोरी में मेरी बेटी उसके लिए थोड़े दाने ले आयी और मेरा बेटा एक कटोरी में थोड़ा पानी ले आया। हमने सोचा कि अब हम इसको अपने पास ही रख लेते हैं ।

काफी देर तक वह चिड़िया का बच्चा उड़ा नहीं। हमें लगा कि शायद अब यह हमारे साथ रहना चाहता है, इसको हमारे साथ अच्छा लग गया है। हमने भी उसे पालने का मन बना ही लिया था।

दाना–पानी मिलने के बाद थोड़ी देर में ही वह हमारी छत पर चलने लगा। वह चलने लगा तो हम भी उसके पीछे–

पीछे चलने लगे, चलते रहे, चलते रहे तो देखा कि कभी वह दाने चुगता था, फिर आगे जाता फिर पीछे जाता, कभी इधर उड़ता, कभी उधर उड़ता। तो हमें लगा कि अब तो यह हमारे साथ घुल मिल गया है। यूं ही फिर हमने देखा कि वह धीरे–धीरे चलते–चलते हमारे छत के अंतिम छोर पर पहुंच गया है।

हम सब वही खड़े थे। हमें लगा कि अब तो यह शायद कहीं नहीं जायेगा, अब तो शायद इसे हमारे साथ अच्छा लगने लगा है। तो हम भी बेफिक्र होकर उसे देखने लगे थे। तो अचानक हम क्या देखते हैं कि यह तो चिड़िया का बच्चा तो उड़ गया और उड़कर वह दूसरे घर की छत पर पहुंच गया। फिर वहां से भी धीरे–धीरे, उड़ते–उड़ते वह आंखों से ओझल हो गया। उस समय हमें ऐसा लगा जैसे चिड़िया ने हमें ठग लिया है और हम ठगे गए हैं। हमारी चिड़िया पालने के अरमानों में पानी फिर गया।

इस बात को सोचकर हम सब हंसने लगे और हम अपने घर के अंदर आ गये। इस अनुभव से मुझे लगा कि वास्तव में चिड़िया को पिंजरे में रहना पसंद नहीं होता है, बल्कि उसे मस्त होकर खुले आसमान में उड़ना पसंद होता है।

*(लेखिका उच्च प्राथमिक विद्यालय मूनाकोट, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका के पद पर हैं)*